क्रांति समय
हिन्दी दैनिक अखबार में विज्ञापन, प्रैस नोट, जन्म दिन की शुभकामनाएँ, या अपने विस्तार में किसी भी समस्या को अखबार में प्रकाशित करने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 9879141480

दैनिक
क्रांति समय

RNI.No. : GUJHIN/2018/75100

क्रांति समय
हमारे यहां पर एल.आई.सी., कार-बाईक-ट्रक का इन्सयोरेंशन, रेल टिकट, एयर टिकट बनवाने के लिए संपर्क करें:-
बी-4 घंटी वाला कॉम्पलेक्ष उधना तीन रास्ता, उडुप्पी होटल के बगल में, सूरत-394210
मो. 8980974047

संपादक : सुरेश मौर्या मो. 9879141480 सह संपादक : संदीप मौर्या
E-mail: krantisamay@gmail.com
सूरत, वर्ष: 1 अंक: 268, मंगलवार, 23 अक्टूबर, 2018, पेज: 4, मुल्य 1 रु.
रजीस्ट्रड ऑफिस:- 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात
Email: krantisamay@gmail.com Web site : www.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सार समाचार

संविदा कर्मियों का धरना प्रदर्शन आज

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) सहित दिल्ली सरकार के दर्जनों विभागों में ठेके पर काम कर रहे कर्मचारियों ने सोमवार को धरना प्रदर्शन करने व आंदोलन तेज करने का निर्णय लिया है। डीटीसी में कांट्रैक्ट पर काम कर रहे ड्राइवर व कंडक्टर के आंदोलन में शामिल होने से कई डिपो के बस परिचलान का कार्य प्रभावित होने की संभावना है। कांट्रैक्ट पर काम कर रहे कर्मियों का धरना सोमवार को 10 बजे डीटीसी मुख्यालय पर शुरू होगा। आंदोलनकारियों ने मुख्यमंत्री को संबोधित करते हुए एक पर्चा जारी किया है कि 21 अक्टूबर तक उनकी मांग को पूरा किया जाए, अन्यथा 22 अक्टूबर को उनका आंदोलन शुरू हो जाएगा।

पुलिस की मौजूदगी में दबंगों की सीनाजोरी का वीडियो वायरल

पुराने सीलमपुर इलाके में 18 अक्टूबर को हुई घटना

दबंगों ने पुलिस जिप्सी के सामने किया युवक पर हमला मामला दर्ज, बंदूकों के लाइसेंस रद्द करने की प्रक्रिया की शुरू

नई दिल्ली। पुराने सीलमपुर इलाके में पुलिस की मौजूदगी में दबंगों की सीनाजोरी का एक वीडियो वायरल हुआ है। बेखौफ दबंगों ने पुलिस की जिप्सी के सामने ही एक युवक पर पिस्टल की बट, चाकू और लोहे की रॉड से हमला कर उसे अधमरा कर दिया। पुलिस ने घायल युवक सुल्तान हैदर को जीटीबी अस्पताल में भर्ती करा दिया है। जहां उनका इलाज चल रहा है। कृष्णानगर पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर गैर इरादतन हत्या की कोशिश और जान से मारने की धमकी देने के तहत केस दर्ज कर लिया है। इसमें यूसुफ़ यूनुस, इरफान और शहजाद को आरोपित बनाया गया है। वहीं उधर, वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस हरकत में आई और पुलिस उपायुक्त मेघना यादव का कहना है कि दूसरे पक्ष ने भी शिकायत दी है। इसकी जांच की जा रही है। झगड़े के दौरान नजर आए बंदूकों के लाइसेंस रद्द करने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। सुल्तान हैदर (31) अपने परिवार के साथ न्यू शांति मोहल्ला में रहते हैं। उनकी पुराना सीलमपुर में कपड़े की दुकान है। गली नंबर-19 में गोदाम भी है। गत 16 अक्टूबर को हन्नान नामक शख्स के बेटे राजा, उसके साले जावेद व भाइयों ने गोदाम का शटर तोड़कर कपड़ा चोरी कर लिया था। सुल्तान ने कृष्णा नगर थाने में शिकायत दी। इस बीच समाज के कुछ जिम्मेदार लोगों ने कपड़ा वापस दिलाने की बात की। हन्नान ने 18 अक्टूबर की शाम को सारा कपड़ा वापस देने का वादा किया। सुल्तान का आरोप है कि वह शाम करीब चार बजे दुकान पर बैठे थे। तभी हन्नान का बेटा इरफान एक अन्य के साथ आया और कहा कि चोरी हुआ कपड़ा उनकी दुकान पर रखा है, आकर ले लो। सुल्तान इरफान के साथ उसकी दुकान पर पहुंच गए। तभी आरोपियों ने उन पर हमला कर दिया। वह जान बचाने के लिए बाहर निकले तो यहां भी आरोपियों ने घेर लिया।

आजाद हिंद सरकार की 75वीं वर्षगांठ के मौके पर नई दिल्ली के लालकिले में आयोजित कार्यक्रम में आईएनए के कुछ ही जीवित बचे सदस्यों में से एक लालती राम को सहारा देकर कुर्सी पर बैठाते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी।

दिल्लीवालों को 'सेक्सटॉर्शन' में फंसाकर उगाही कर रहे साइबर अपराधी

नई दिल्ली। पश्चिमी देशों में पहले से लोगों को 'सेक्सटॉर्शन' के जरिए शिकार बना रहे साइबर अपराधी अब दिल्लीवालों को भी अपने जाल में फंसा रहे हैं। साइबर अपराध के चौंकाने वाले इस ट्रेंड से जुड़े 30 मामले बीते छह माह में दिल्ली में सामने आ चुके हैं। खास बात है कि इसमें अपराधी बदनाम करने की धमकी देकर पीड़ित से क्रिप्टो करेंसी बिट क्वाइन में वसूली करता है।

यह है 'सेक्सटॉर्शन'

साइबर अपराधी मालवेयर के जरिए आपके कंप्यूटर सिस्टम या नेटवर्क को हैक कर लेता है।

आपकी ब्राउजिंग हिस्ट्री हैक करते ही वह आपकी गतिविधियों पर नजर रखने लगता है। ऐसे में आप किसी भी अश्लील वेबसाइट या कंटेंट को देखते हैं तो वह इसकी जानकारी हासिल कर लेता है। इसके बाद साइबर अपराधी आपको ईमेल कर यह बात सार्वजनिक करने की धमकी देकर जबरन वसूली करता है।

इस तरह के हथकंडे अपनाए जाते हैं

साइबर अपराधी कई तरीकों से लोगों को 'सेक्सटॉर्शन' के जाल में फंसाते हैं।

साइबर अपराधी कई बार मालवेयर के जरिए आपके कंप्यूटर सिस्टम या नेटवर्क को हैक कर जानकारी हासिल कर लेते और इसी के आधार पर वसूली करते हैं। वहीं, कभी लड़की बनकर आपसे बात करते हुए जानकारी हासिल कर लेते हैं।

भरोसा हासिल करने के बाद कई बार वह आपसे इंटीमेट फोटो भेजने की मांग करते हैं तो कभी पॉर्न वेबसाइट का लिंक डालकर आपको उसे क्लिक करने के लिए उकसाते हैं।

इन तरीकों से कई बार साइबर अपराधी किसी लड़की को अपने जाल में फंसाकर उससे रुपयों या 'सेक्सुअल फेवर' की मांग करते हैं।

साइबर अपराधियों से ऐसे बचें

- अपनी ईमेल आईडी, पासवर्ड और यूजर आईडी की जानकारी किसी भी अनजान शख्स को मोबाइल पर न दें
- अपने पासवर्ड में शब्द के साथ नंबर और अन्य सिंबल का इस्तेमाल कर इसे जटिल बनाएं, ताकि साइबर अपराधी इसे आसानी से तोड़ न सकें
- अपने कंप्यूटर और लैपटॉप में अच्छे एंटी वायरस का इस्तेमाल करें, इससे वह सुरक्षित रहेंगे

क्या कर रही साइबर सेल

साइबर अपराधियों खासतौर से 'सेक्सटॉर्शन' करने वालों की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए दिल्ली पुलिस की साइबर सेल कई नए सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल कर रही है। आइए इनके बारे में जानते हैं :-

- कंप्यूटर या लैपटॉप हैक कर सूचनाएं हासिल करने वालों पर नजर रखने के लिए मालवेयर फॉरेंसिक टूल खरीद रही है
- क्रिप्टो करेंसी में ट्रांजेक्शन करने वालों पर नजर रखने के लिए क्रिप्टो करेंसी सॉफ्टेवयर खरीदेगी
- क्लाउड फॉरेंसिक टूल नेटवर्क लेकर सूचनाएं क्लाउड पर डालकर पुलिस से बचने वालों पर नजर रखी जाएगी
- डैमेज हार्ड डिस्क फॉरेंसिक टूल' के जरिए नष्ट हो चुकी सूचनाएं हासिल करने का काम करेगी

नीरज बावनिया गिरोह का था शार्प शूटर, एक पिस्टल व पांच कारतूस बरामद

नई दिल्ली। पुलिस ने इसी साल मार्च महीने में लाजपत नगर इलाके में एक जौहरी के बेटे और उसके साथी पर गोली चलाने वाले कुख्यात बदमाश को दबोचा है। आरोपी की पहचान अभिषेक उर्फ शीनू के रूप में हुई, जो नीरज बवानिया और नवीन भांजा गिरोह का शार्प शूटर बताया जा रहा है।

आरोपी के कब्जे से पुलिस ने एक पिस्टल व पांच कारतूस बरामद किए हैं। जांच में पता चला कि आरोपी ने पिछले छह माह के अंदर ही लाजपत नगर में दहशत फैलाने के नाम पर फायरिंग की दो वारदातों को अंजाम दे चुका है। आपराधिक वारदातों को अंजाम देने के बाद पुलिस ने आरोपी पर 50 हजार का इनाम भी घोषित किया था।

जिला पुलिस उपायुक्त चिन्मय बिश्वाल ने बताया कि गत 26 मार्च को लाजपत नगर में स्थित ढाबे पर एक जौहरी के बेटे और उसके साथी को कुछ बदमाशों ने गोली मार दी थी। जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराकर पुलिस आरोपी की तलाश में जुट गई थी। जांच में वारदात को अंजाम देने की पीछे नीरज बवानिया और नवीन भांजा गिरोह के सदस्यों का हाथ होने पाया गया। जिसके बाद कार्रवाई करते हुए पुलिस ने गिरोह के शिबू उर्फ सुबेग सिंह, प्रवीण सिंघल व हनी चौधरी को गिरफ्तार कर लिया था, लेकिन अभिषेक फरार चल रहा था। जिसके बाद पुलिस ने उसकी गिरफ्तारी पर 50 हजार रपए का इनाम घोषित कर दिया। इसी बीच शनिवार को एक गुप्त सूचना के आधार पर हिमायुं के मकबरे के पास से एसएचओ सतेन्द्र मोहन की टीम ने हथियार के साथ आरोपी को दबोच लिया।

आप की 3 हजार टीमें चार महीने तक घर-घर जाकर मांगेंगी चंदा

केजरीवाल ने की घर-घर जाकर चंदा मांगने के अभियान की शुरुआत

नई दिल्ली, एजेंसी। आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने रविवार को घर-घर जाकर चंदा मांगने के अभियान (डोर टू डोर कैंपेन) की शुरुआत की। इस मौके पर केजरीवाल अपने विधानसभा क्षेत्र के नई दिल्ली में कई घरों में गए और लोगों से वोट व पार्टी के लिए चंदा देने की अपील की। पार्टी की ओर से शुरू किए गए इस अभियान के तहत पार्टी की तीन हजार टीमें घर-घर जाकर लोगों से चंदा देने की अपील करेंगी। ऐसा अगले चार महीनों तक दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में किया जाएगा। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के अलावा उनके साथी मंत्रियों, सांसदों, विधायकों, पार्षदों और पार्टी के अन्य नेताओं व कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने क्षेत्र में जाकर यह कैंपेन शुरू कर दिया है। इस मौके पर अरविंद केजरीवाल ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि आज से हमने दिल्ली में डोर-टू-डोर कैंपेन की शुरु आत कर दी है। हम दिल्ली की जनता के बीच जाएंगे और उन्हें समझाएंगे कि पिछली बार आपने भाजपा को दिल्ली से सात सांसद जिता कर दिए थे, इन सांसदों ने दिल्ली की जनता के हक में एक भी काम नहीं किया, सिर्फ दिल्ली सरकार के कामों में अड़ंगे लगाए। हमारी लोगों से अपील है की हमें चाहे 100 रु पए ही हर महीने चंदा दे दें, हम उसी में चुनाव लड़ लेंगे। इस अभियान में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के अलावा उप-मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, सभी मंत्री, पार्टी के सभी सांसद, दिल्ली के लोकसभा क्षेत्र प्रभारी, दिल्ली के सभी विधायक, सभी पार्षद, पार्टी पदाधिकारी और कार्यकर्ता घर-घर जाकर वोट और चंदा मांगेंगे।

चंदा मांगने के डोर टू डोर कैंपेन के दौरान मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल।

दिलीप पांडे ने ने भी घर-घर जाकर मांगा चंदा : आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और उत्तर-पूर्वी दिल्ली लोकसभा क्षेत्र प्रभारी दिलीप पांडे ने सरकार में मंत्री गोपाल राय के साथ बाबरपुर विधानसभा में साई मंदिर, विजय पार्क से डोर टू डोर कैम्पेन की शुरु आत करके आमजन से आर्थिक भागीदारी की मांग की। दिलीप पाण्डेय ने लोगों से अनुरोध किया कि देश में ईमानदार राजनीति को स्थापित करने के लिए जनता की भागीदारी जरूरी है। लोगों से आग्रह किया कि कम से 100 रुपए महीने राष्ट्र निर्माण के लिए आम आदमी पार्टी को चंदा जरूर दें। आप चाहें तो जितना संभव हो सके, लेकिन मदद जरूर करें।

गांधी की जीवनी के उज्बेकी अनुवाद का विमोचन

नई दिल्ली। महात्मा गांधी के जीवन एवं उनके अतुलनीय योगदान को सम्मानित करने के लिए रिपब्लिक ऑफ उज्बेकिस्तान के दूतावास ने रविवार को उनकी जीवनी ''द स्टोरी ऑफ माई लाइफ' के उज्बेकी रूपांतरण के सीमित संस्करण का यहां विमोचन किया। समारोह में मशहूर उज्बेक फैमिली बैंड ने ''वैष्णव जन तो' की विशेष लाइव प्रस्तुति दी, जिसे हाल ही में महात्मागांधी की 150वीं वर्षगांठ पर उन्हें श्रद्धांजलि देने 124 से अधिक देशों के मशहूर कलाकारों ने प्रस्तुत किया था। दूतावास की तरफ से जारी बयान के अनुसार, महात्मा गांधी की किताब के उज्बेक अनुवाद का प्रकाशन उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति एच.ई. शवकत मिर्जियोयेव के ऐतिहासिक भारत दौरे के मौके पर किया गया था। दिल्ली में उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति ने भारत के राष्ट्रपति को किताब पेश की थी, जब दोनों राष्ट्राध्यक्ष इस माह राष्ट्रपति भवन में मिले थे। उज्बेकिस्तान दूतावास ने किताब, ''द स्टोरी ऑफ माई लाइफ' की अनूदित प्रतियां गांधी स्मृति को भेंट कीं। बयान के अनुसार, इस मौके पर अवार्ड-विनिंग उज्बेक फैमिली ग्रुप ''हवस' के काह्रामोन गुलोमजोनोव ने गांधीजी का प्रिय भजन प्रस्तुत किया।

>>> केजरीवाल बोले- इसके पीछे भाजपा का हाथ

हड़ताल के चलते दिल्ली के 400 पेट्रोल पंप बंद

नई दिल्ली, एजेंसी। अगर आप सोमवार को अपने वाहन से दफ्तर या दुकान के लिए निकल रहे हैं तो तेल भराने के लिए भटकना पड़ सकता है। पड़ोसी राज्य यूपी और हरियाणा में सस्ता डीजल-पेट्रोल होने से दिल्ली में बिक्री घटने से नाराज दिल्ली के पेट्रोल पंप संचालक सोमवार को हड़ताल पर है। इसके चलते दिल्ली के करीब 400 पेट्रोल आज पंप बंद है।

सीएनजी पंप भी बंद है। पेट्रोल पंप संचालकों का कहना है पड़ोसी राज्यों ने वैट घटाकर अपने यहां दरें कम कर दी हैं। यूपी की तुलना में दिल्ली में पेट्रोल करीब 3 रुपये और डीजल 2 रुपये से अधिक महंगा है। इससे दिल्ली वाले भी उत्तर प्रदेश जाकर तेल भरवा जा रहे हैं।

ऑल इंडिया पेट्रोलियम डीलर्स एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष अजय बंसल ने कहा कि हम नहीं चाहते कि आम लोगों को परेशानी हो। दिल्ली सरकार ऐसा फॉर्मूला बनाए, जिससे कम से कम दिल्ली एनसीआर में पेट्रोल और डीजल के दामों में समानता हो। उधर, इसको लेकर सियासत भी शुरू हो गई है। भाजपा और 'आप' ने एक दूसरे पर निशाना साधा है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा- पेट्रोल पंप मालिकों ने मुझे निजी तौर पर बताया है कि यह हड़ताल भाजपा की ओर से प्रायोजित है। इसको तेल कंपनियों का समर्थन है। भाजपा के लोग पंप मालिकों को ऐसा करने के लिए दबाव बना रहे हैं।

भाजपा को जनता चुनाव में इसका जवाब देगी। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष मनोज तिवारी ने कहा कि दोस्तों, भाइयों और बहनों दफ्तर जाने से पहले वाहन में पहले ही ईंधन भरवा लें, अन्यथा मेट्रो से सफर करें। डीटीसी की बसों का सामर्थ्य मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने एक तिहाई कर दिया है। काहे की जिद, 5 रुपये कम कर दो वैट पेट्रोल-डीजल पर।

डीटीसी के अस्थायीकर्मी आज से काम ठप रखेंगे

डीटीसी और क्लस्टर बस की सेवाएं भी सोमवार को प्रभावित रहेंगी। दोनों ही जगह अनुबंध पर काम करने वाले कर्मचारी समान काम-समान वेतन और नियमित किए जाने की मांग को लेकर सोमवार से बेमियादी हड़ताल शुरू करेंगे। डीटीसी के करीब 12 हजार अनुबंधित कंडक्टर और चालक धरने में शामिल होंगे। इसके चलते डीटीसी की बस सेवा प्रभावित रहेगी। क्लस्टर में तैनात कर्मचारी इसमें शामिल हुए तो पूरी क्लस्टर बस सेवा ही प्रभावित रहेगी।

डीटीसी अनुबंधित कर्मचारियों का कहना है कि अगर 28 अक्तूबर तक उनकी मांगों को लेकर बात नहीं बनी तो 29 अक्तूबर को वह चक्का जाम करेंगे। एमसीडी, शिक्षा विभाग, समाज कल्याण विभाग में अनुबंध पर तैनात कर्मचारी भी शामिल हो रहे हैं।

ओला, ऊबर के खिलाफ आटो, टैक्सी का चक्का जाम

ओला, ऊबर को नियमित करने और उनका न्यूनतम किराया बढ़ाने समेत अलग-अलग मागों को लेकर बीते कई दिनों से राजघाट पर प्रदर्शन कर रहे आटो व टैक्सी चालकों ने सुनवाई नहीं होने पर सोमवार को चक्का जाम करेंगे। संयुक्त संघर्ष मोर्चा के बैनर तले इसमें 15 से अधिक टैक्सी और आटो संगठन शामिल हो रहे है। ओला, उबर के साथ काम करने वाले टैक्सी चालकों के अलावा इसमें काली-पीली, रेडियो, इकोनामी टैक्सी और आटो भी शामिल हो रहे है। मोर्चा का आरोप है कि इन कंपनियों के न्यूनतम किराया आटो से भी कम है। इसके चलते आटो चालक बेरोजगार हो रहे है। टैक्सी चालकों को इन कंपनियों ने गुलाम बना रखा है।

बंधुआ मजदूर की तरह उनसे काम करा रहे है और उनसे कमीशन ले रहे है। इनकी मांग है कि सरकार इनका न्यूनतम किराया बढ़ाएं। कंपनियों ने जिन चालकों को ब्लॉक कर दिया है उन्हें दोबारा काम दें। बताते चले कि इस चक्का जाम में दिल्ली एनसीआर के अधिकांश संगठन शामिल हो रहे है। इसके चलते ओला-ऊबर के साथ दिल्ली एनसीआर में जुड़ी 60 हजार से अधिक टैक्सी के अलावा 95 हजार आटो सड़कों पर नहीं उतरेंगे। सिर्फ यही नहीं सोमवार को आल इंडिया टूरिस्ट परमिट (एआईटीपी) के ट्रांसपोर्टर्स ने भी सोमवार को सेवाएं बंद करा के संसद तक मार्च निकालने की तैयारी में है।

युवतियों में तेजी से बढ़ रहा स्तन कैंसर

देश में स्तन कैंसर के मामले दुनिया के मुकाबले दोगुने

नई दिल्ली। भारतीय मरीजों में स्तन कैंसर के ग्रेड और चरण अन्य देशों की तुलना में अधिक उच्च होते हैं। यहां तक कि पढ़ी-लिखी जो महिलाएं स्तन कैंसर का इलाज कराती हैं वे भी इलाज के लिए वैकल्पिक विधियों को अपनाती हैं। कीमोथेरेपी या मास्टेक्टोमी सर्जरी के बारे में कई गलतफहमी और जागरूकता की कमी है और इसके कारण ज्यादातर महिलाएं समय पर इलाज नहीं कराती हैं और ज्यादातर वैकल्पिक दवाइयों के विकल्प को चुनती हैं मैक्स हास्पिटल शालीमार बाग के ब्रेस्ट ओंकोलॉजी की वरिष्ठ कंसल्टेंट डा. एस वेदा पद्म प्रिया ने कहा भारत में, सालाना हर पच्चीस में से एक महिला में स्तन कैंसर का निदान किया जाता है, जो अमेरिका, ब्रिटेन जैसे विकसित देशों की तुलना में कम है जहां सालाना 8 में से 1 रोगी में स्तन कैंसर का निदान किया जाता है। जिन मरीजों में स्तन कैंसर की पहचान होती है उन मरीजों में से हर दो रोगियों में से एक रोगी की अगले पांच वर्षों में मौत हो जाती है जो 50 प्रतिशत मृत्यु दर के लिए जिम्मेदार होते हैं। शहरों में कई रोगियों में रोग की पहचान दूसरे चरण में की जाती है जब टी 2 घाव ऐसे गांठ होते हैं, जिन्हें स्पर्श करने पर महसूस किया जा सकता है लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों के मामलों में, इन घावों का पता मेटास्टैटिक ट्यूमर में परिवर्तित होने के बाद ही चलता है।

यह भी : एम्स में कार्डियोलॉजी यूनिट के प्रो.डा. राकेश यादव के अनुसार नियंतग्र स्तर पर, 40 साल से कम उम्र की 7 प्रतिशत आबादी स्तन कैंसर से पीड़ित है, जबकि भारत में, यह दर दोगुनी है यानी 15 प्रतिशत है। जिनमें 1 प्रतिशत रोगी पुरुष हैं, जिसके कारण विश्व स्तर पर भारत से स्तन कैंसर रोगियों की सबसे ज्यादा संख्या हो जाती है। स्तन कैंसर वंशानुगत होता है, इसके अलावा, कई अन्य जोखिम कारक जैसे निष्क्रिय जीवनशैली, शराब का सेवन, धूम्रपान, युवाओं में मोटापा और तनाव में वृद्धि और खराब आहार के सेवन को भी युवा भारतीय महिलाओं में स्तन कैंसर के मामलों में वृद्धि के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है।

एनसीबीआई 2016 द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार, शाकाहारी महिलाओं को स्तन कैंसर होने का खतरा 40 प्रतिषत कम होता है। सरोज हास्पिटल के डा. पीएन उप्पल के अनुसार लोगों में यह जागरूकता पैदा की जानी चाहिए कि प्रारंभिक चरणों में ही अधिकांश स्तन कैंसर का पता लग जाता है।

संपादकीय

भारत का वातावरण ऐसा बदल

मध्य प्रदेश चुनाव में अपनी उपेक्षा से दुखी होकर उन्हें कहना पड़ा कि पार्टी उनका उपयोग इसलिए नहीं कर रही क्योंकि उनके जाने से वोट कट जाता है। वहीं हिन्दू आतंकवाद पर बयान देने वाले सुशील शिंदे भी दिख नहीं रहे। वस्तुत: 2014 की पराजय पर बनी ए.के. एंटनी समिति की रिपोर्ट में साफ कहा गया था कि यूपीए सरकार के दौरान कांग्रेस की हिन्दू विरोधी एवं मुस्लिमपरस्त की छवि बन गई जिसका पूरा लाभ भाजपा को मिला। दूसरी ओर, मुसलमान भी हमें छोड़कर जहां भी अवसर मिला क्षेत्रीय पार्टियों की ओर चले गए। जैसे-जैसे कांग्रेस विधानसभा चुनाव हारती गई उसके अंदर यह भय पैदा होता गया कि कहीं वह स्थायी रूप से राजनीति के हाशिये पर न पहुंच जाए। तो बहुत सोच-समझ इस छवि को तोड़ने की रणनीति बनाई गई। इस दिशा में पहला बड़ा वक्तव्य कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता रणदीप सिंह सुरजेवाला का था, जिन्होंने राहुल गांधी की स्व. राजीव गांधी को मुखाग्नि देते समय की तस्वीर को प्रदर्शित करते हुए कहा कि वे न केवल हिन्दू हैं।

सतीश पेडणोकर

कौन सोच सकता था कि कांग्रेस के कद्दावर नेता गुलाम नबी आजाद को कहना पड़ेगा कि पहले चुनावों में हमारी मांग ज्यादा होती थी और यह 95 प्रतिशत हिन्दू भाइयों की तरफ से होती थी, जो घटकर 20 प्रतिशत रह गई है। हालांकि यह कहने के लिए उन्होंने सर सैयद अहमद के 200 वें जन्म दिन पर अलीगढ़ मुस्लिम विविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम को चुना। वे बता रहे हैं कि पिछले चार वर्षो में भारत का वातावरण ऐसा बदल गया है,हिन्दू-मुसलमान के बीच खाई इतनी बढ़ गई है कि लोग उनको चुनावी सभाओं में बुलाने से इसलिए बचते हैं कि कहीं हिन्दू वोट न खिसक जाए। ऐसा सोचने वाले पार्टी में दूसरे मुसलमान नेता भी हैं। इस समय कांग्रेस पार्टी चुनावों में केवल मुस्लिम नेताओं का ही नहीं, वैसे नेताओं का भी इस्तेमाल करने से परहेज कर रही है जिनकी छवि मुस्लिमपरस्त की हो गई है। दिग्विजय सिंह इसके बड़े उदाहरण हैं। मध्य प्रदेश चुनाव में अपनी उपेक्षा से दुखी होकर उन्हें कहना पड़ा कि पार्टी उनका उपयोग इसलिए नहीं कर रही क्योंकि उनके जाने से वोट कट जाता है। वहीं हिन्दू आतंकवाद पर बयान देने वाले सुशील शिंदे भी दिख नहीं रहे। वस्तुत: 2014 की पराजय पर बनी ए.के. एंटनी समिति की रिपोर्ट में साफ कहा गया था कि यूपीए सरकार के दौरान कांग्रेस की हिन्दू विरोधी एवं मुस्लिमपरस्त की छवि बन गई जिसका पूरा लाभ भाजपा को मिला। दूसरी ओर, मुसलमान भी हमें छोड़कर जहां भी अवसर मिला क्षेत्रीय पार्टीयों की ओर चले गए। जैसे-जैसे कांग्रेस विधानसभा चुनाव हारती गई उसके अंदर यह भय पैदा होता गया कि कहीं वह स्थायी रूप से राजनीति के हाशिये पर न पहुंच जाए। तो बहुत सोच-समझ इस छवि को तोड़ने की रणनीति बनाई गई। इस दिशा में पहला बड़ा वक्तव्य कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता रणदीप सिंह सुरजेवाला का था, जिन्होंने राहुल गांधी की स्व. राजीव गांधी को मुखाग्नि देते समय की तस्वीर को प्रदर्शित करते हुए कहा कि वे न केवल हिन्दू हैं, बल्कि जनेऊधारी हिन्दू हैं। कांग्रेस के इतिहास में पहली बार अपने नेता के धर्म एवं जाति के बारे में ऐसा वक्तव्य दिया गया। हालांकि राहुल गांधी का कभी उपनयन संस्कार नहीं हुआ। लेकिन चुनावों के दौरान मंदिरों का कैमरे के सामने दौरा, पूरी रीति-रिवाज से पूजा-पाठ करने से लेकर कैलाश मानसरोवर की कठिन यात्रा तथा तस्वीरें जारी करना आदि हिन्दुत्वनिष्ठ छवि निर्मित करने की ही प्रक्रिया का अंग है। कांग्रेस का मानना है कि इसके बगैर नरेन्द्र मोदी एवं भाजपा को चुनौती नहीं दी जा सकती। गुजरात चुनाव में कांग्रेस ने भाजपा को जैसी टक्कर दी उसके कई कारण थे,लेकिन पार्टी का आकलन है कि राहुल की धर्मनिष्ठ हिन्दू-छवि की उसमें प्रमुख भूमिका थी और ऐसा नहीं किया जाता तो कर्नाटक में ज्यादा दुर्दशा होती। भाजपा बहुमत पा जाती। यह सामान्य राजनीतिक रणनीति लग सकती है किंतु भारतीय राजनीति में युगांतकारी बदलाव का आयाम इसमें अंतर्निहित है। यह केवल कांग्रेस की बात नहीं है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव द्वारा गोहत्या बंदी के समर्थन का ट्वीट तथा अंगकोर वाट की तर्ज पर विष्णु मंदिर बनाने का ऐलान सामान्य घटना नहीं है। देश ने केरल में सीताराम येचुरी को सिर पर यज्ञकलश लिए हुए तस्वीरें मीडिया में देखीं। तेलंगाना के मुख्यमंत्री के.चन्द्रशेखर राव का धार्मिक कर्मकांड लगातार चर्चा में है। हिन्दुत्व के खिलाफआक्रामक दिखने वाली पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को हिन्दू धार्मिक उत्सवों में मीडिया के कैमरे लेकर जाने को विवश होना पड़ा। उन्होंने दुर्गा पंडालों को नकद राशि दान करने की भी घोषण कर दी। पूर्वोत्तर के ही नहीं, दक्षिण भारत के वायुमंडल में भी हिन्दुत्व का प्रबल आवेग दिखाई पड़ रहा है। इन उदाहरणों से राजनीति की यह नई धारा रूपाकार ग्रहण करती हुई दिख रही है। इसमें हिन्दुत्व निष्ठ प्रदर्शित करने का प्रयास मूल में है। राजनीतिक दल भले वोट के लिए ऐसा कर रहे हैं, लेकिन इसी से संभव है भारत सांस्कृतिक अस्मिता पाने के लक्ष्य की ओर अग्रसर हो जाए। आजादी के दौरान और उसके बाद के नेताओं में बड़ी संख्या ऐसे लोगों की थी, जो मानते थे कि भारतीय संस्कृति का नवनीत अध्यात्म है। यही भारत की आत्मा है और इसके आधार पर राष्ट्र के शरीर की स्वाभाविक रचना हो सकती है। किंतु सेक्यूलरवाद की विकृत व्याख्या, हिन्दू वोटों के प्रति निश्चिंतता व उसे चुनौती न मिलने तथा मुस्लिम वोटों की अति चिंता ने राजनीति की दिशा को विकृत कर दिया। जैसे हर व्यक्ति का एक चरित्र होता है, वैसे ही राष्ट्र का भी होता है। राष्ट्र को उसके चरित्र के अनुरूप विकसित करने की कोशिश नहीं की गई तो उसमें बहुविध प्रकार की बीमारियां समस्याओं के रूप में खड़ी हो जाती हैं। यही भारत के साथ हुआ है। समय बीतने के साथ इस देश का सामूहिक मानस यह अनुभव तो करने लगा कि कुछ गलत हो रहा है, वह व्यवस्था के सामने भौचक्क रहा, उसे समझ नहीं आया कि क्या होना चाहिए। लेकिन उससे मुक्ति की छपटपटाहट जोर मारने लगी। राजनीति के माध्यम से उसने कभी क्षेत्र या राष्ट्र के स्तर पर करवट लेने की कोशिश की, क्षणिक सफलताएं भी मिलीं, लेकिन फिर आघात लगा। यह अपक्रम जारी है। 1990 के दशक में आरंभ अयोध्या आंदोलन ने सांस्कृतिक पुनर्जागरण को सबसे बड़ा बल दिया, लेकिन इसे अनुशासित और दिशायुक्त बनाने में विफलता के कारण हुए बाबरी विध्वंस के साथ यह फिर कमजोर पड़ गया। हालांकि सांस्कृतिक अस्मिता की वेदना खत्म नहीं हुई। 1998-99 में मिले मौके को भी गंवा दिया गया। देश ने फिर करवट बदली और 2014 भारतीय राजनीति में इस क्रम का सबसे मुखर परिवर्तन था जिसे पाराडाइम शिफ्ट माना गया। वस्तुत: यह चुनाव परिणाम सांस्कृतिक पुनर्जागरण का सामूहिक राजनीतिक प्रस्फुटन था। राजनीतिक सफलता के इस मर्म को समझने में भाजपा के नेता भी सफल नहीं रहे हैं किंतु उसका एक सकारात्मक परिणाम यह हुआ कि अन्य दलों को लग गया है किअब हिन्दुओं को नजरअंदाज करके राजनीति नहीं की जा सकती। तो यह जो भाव पैदा हुआ है, वह राजनीतिक लाभ-हानि के ईर्द-गिर्द सिमटा दिखते हुए भी ऐतिहासिक है। दरअसल, भारत तीन दशकों से सांस्कृतिक-मंथन के दौर से गुजर रहा है। इससे अमृत-विष दोनों निकल रहे हैं। इसका रास्ता यह नहीं है कि मुस्लिम नेताओं को महत्त्वहीन कर दें। वस्तुत: राजनीतिक दल अपनी छोटी दृष्टि के कारण इसकी मनमानी व्याख्या कर रहे हैं। किंतु इसका अंतिम परिणाम देश के लिए अच्छा होगा। वास्तव में जो दल सांस्कृतिक करवट लेने की इस अंतर्धारा को सही तरीके से समझकर अपनी नीतियां नहीं बनाएगा, वह बहाकर किनारे कर दिया जाएगा।

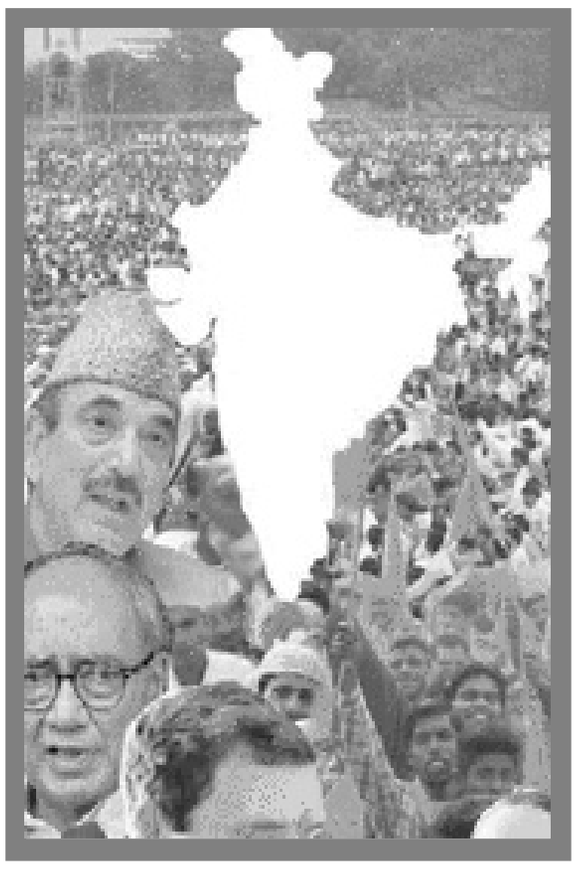

प्राकृतिक हादसा

अमृतसर की खूनी त्रासदी को क्या कहें; इसके लिए उपयुक्त शब्द तलाशना मुश्किल है। जिस तरह विजयादशमी पर रावण दहन का आनंद उठाते लोग धड़धड़ाती आई रेल द्वारा कुचल दिए गए उससे पूरा देश सिहर गया। विजयादशमी क्षण भर में गम में बदल गई। हालांकि न यह रेल दुर्घटना है और न ही अतीत में हुए धार्मिक आयोजनों जैसी कोई मानवीय या प्राकृतिक हादसा। साफ है कि अगर लोग रेलवे लाइनों पर खड़े नहीं होते तो यह हादसा नहीं होता। यह स्थानीय प्रशासन की अक्षम्य आपराधिक लापरवाही है कि उसने उतनी भीड़ को नियंत्रित रखने के लिए व्यवस्था ही नहीं की। दो पुलिस वाले भी नहीं थे जो लोगों को रेलवे लाइन पर खड़े होकर रावण दहन देखने या मोबाइल से वीडियो बनाते या तस्वीरें खींचने से रोक पाते। हालांकि इस घटना का पोस्टमार्टम करते हुए कई ऐसे प्रश्न उठाए जा रहे हैं, जो बेमानी हैं। जब वर्षो से वहां यह कार्यक्रम होता आ रहा है तो यह प्रश्न उठाना कि रेलवे लाइन के पास आयोजन हुआ ही क्यों, समझ से परे है। रावण दहन के ऐसे अनेक स्थान रेलवे लाइन के आसपास मिल जाएंगे। रेल चालक को भी इसमें दोषी ठहराया जाना उचित नहीं लगता। उतनी तेज गति से चलती रेल में अचानक ब्रेक लगाने से बहुत बड़ा हादसा हो जाता। एक रेल के गुजरने के कुछ ही क्षण बाद एक और रेल दूसरी दिशा से आ गई। वह भी इसका शिकार हो जाती। हादसे के बाद वहां दूसरी त्रासदी इस रूप में थी कि इतने बड़े आयोजन में एक एम्बुलेंस तक उपलब्ध नहीं था। करीब 150 मीटर तक बिखरे चीथड़े-चीथड़े हुए अंगों, शवों को ढोने तथा संगीन चोटों से कराहते लोगों को अस्पताल ले जाने में काफी वक्त लगा। तिस पर स्थानीय सिविल अस्पताल की बदइंतजामी! लगा ही नहीं कि अमृतसर जैसा प्रमुख शहर सामान्य आपात स्थिति से निपटने के लिए तैयार है। यह तीसरी त्रासदी थी। मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह के निजी अस्पतालों को भी घायलों का उपचार करने के आदेश का पालन होते नहीं दिखा। पर जो हुआ वह लंबे समय तक लोगों को सालता रहेगा। जिनके अपने बिछुड़ गए या जो स्थायी रूप से विकलांग हो गए उनके लिए तो हर विजयादशमी गम की स्मृतियों को कुरेदने वाली ही बनकर आएगी। लेकिन इससे सबक लेकर अगर देश का स्थानीय प्रशासन पहले से सुरक्षा का उपाय करे तथा लोग-बाग भी आत्मानुशासित हो कर दुर्घटना संभावित स्थानों पर खड़े होने या बैठने से बचें तभी ऐसे हादसों की पुनरावृत्ति रुक सकती है।

मतभेद की घटनाएं

भारतीय रिजर्व बैंक और केंद्र सरकार के बीच असहमति या मतभेद की घटनाएं कोई नहीं हैं। महंगाई और देश की विकास दर को लेकर दोनों की अपनी प्राथमिकताएं हैं। इन्हें लेकर अपने कार्यक्षेत्र में हस्तक्षेप की आशंका से इनमें असहमति कई बार मुखर होती है। लेकिन डिजिटल भुगतान से संबंधित मामला थोड़ा अलहदा है। वर्तमान में जो डिजिटल भुगतान पण्राली है, उसके नियमन का भार बैंकिंग क्षेत्र के भी नियामक रिजर्व बैंक के कंधों पर है।

दुनिया भर में भुगतान पण्राली केंद्रीय बैंक के तहत ही कार्य करती है। रिजर्व बैंक का मानना है कि क्रेडिट-डेबिट कार्डस बैंक ही जारी करते हैं, इसलिए डिजिटल पेमेंट की जिम्मेदारी या उससे संबंधित अधिकार भी रिजर्व बैंक के पास रहना चाहिए। रिजर्व बैंक करेंसी मामले में तो नियामक बना रहे, लेकिन डिजिटल भुगतान पर उसकी पूरी पकड़ न हो। यही वजह है कि देश में भुगतान संबंधी वर्तमान कानून में एक बड़े परिवर्तन की अनुशंसा करते हुए सरकार की एक उच्चस्तरीय समिति ने एक स्वतंत्र पेमेंट रेगुलेटरी बोर्ड (पीआरबी) गठित करने की मंशा जाहिर की है और समिति रिजर्व बैंक के गवर्नर को इसका पदेन अध्यक्ष बनाने के भी मूड में नहीं है। डिजिटल भुगतान पर बनी वाटल समिति ने भी पीआरबी की स्थापना को रिजर्व बैंक की समग्र संरचना के तहत ही रखने की सिफारिश की थी।

रिजर्व बैंक का यह भी मानना है कि हर प्रकार के भुगतान, चाहे वह डिजिटल हो या प्रत्यक्ष की निगरानी और नियमन रिजर्व बैंक के तहत ही होना चाहिए। करेंसी नोट पर रिजर्व बैंक के गवर्नर का वचन ज्यादा प्रामाणिक है। जैसे-जैसे कैशलेस इकनोमी का चलन बढ़ रहा है, आम आदमी अपने खून-पसीने की कमाई की सुरक्षा के प्रति सशंकित होता जा रहा है। अत: जरूरी है, रिजर्व बैंक को ही देश में किसी भी प्रकार के भुगतान का अंतिम नियामक रहने दिया जाए।

सत्संग

धन, समृद्धि

मानदार जीवन हजार मनकों में अलग चमकता हीरा होता है। ईमानदारी या, धन, समृद्धि का आधार होती है। इसके बावजूद लोग कहते सुने जाते हैं कि व्यापार में बेईमानी बिना काम नहीं चलता, ईमानदारी से रहने में गुजारा नहीं हो सकता, वास्तव में यह गलत है। वस्तुत: जो समझते हैं कि हमने बेईमानी से पैसा कमाया है। वे गलत समझते हैं, असल में उन्होंने ईमानदारी की ओट लेकर ही अनुचित लाभ उठाया होता है। कोई व्यक्ति साफ-साफ यह घोषणा कर दे कि ''मैं बेईमान हूं और धोखेबाजी का कारोबार करता हूं,' तब फिर अपने व्यापार में लाभ करके दिखावे तो यह समझा जा सकता है कि हां, बेईमानी की आड़ लेना कोई लाभदायक नीति है। जिस दिन उसका पर्दाफाश हो जाएगा कि भलमनसाहत की आड़ में बदमाशी हो रही है उस दिन ''कालनेमी माया' का अंत ही समझिये। आप धोखेबाज मत बनिए, ओछे मत बनिये, गलत मत बनिए अपने लिए प्रतिष्ठा की भावनाएं फैलने दीजिए। यह सब होना ईमानदारी पर निर्भर है। छोटा काम, कम पूंजी का, कम लाभ का, अधिक परिश्रम का इत्यादि जो भी काम आपके हाथ में है, उसी में अपना गौरव प्रकट होने दीजिए। यदि आप दुकानदार हैं, तो पूरा तौलिए, नियत कीमत रखिए, जो चीजें जैसी है, उसे वैसी ही कह कर बेचिए। इन तीन नियमों पर अपने काम को अवलम्बित कर दीजिए। मत डरिए कि ऐसा करने से हानि होगी। कम तोलकर या कीमत ठहराने में अपना और ग्राहक का बहुत सा समय बर्बाद करके जो लाभ कमाया जाता है, असल में वह हानि के बराबर है। दुकानदार के प्रति ग्राहक के मन में सन्देह उत्पन्न हुआ, तो समझ लीजिए कि उसके दुबारा आने की तीन चौथाई आशा चली गयी। इसी प्रकार मोलभाव करने में यदि बहुत मगज पच्ची की गयी है, पहली बार मांगे गये दामों को घटाया गया है, तो उस समय भले ही वह ग्राहक पट जाय पर मन में यही धक-पक करता रहेगा कि कहीं इसमें भी अधिक दाम तो नहीं चले गये हैं। ऐसे संकल्प-विकल्पों या संदेह लेकर जो ग्राहक गया है, उसके दुबारा आने की आशा कौन कर सकता है? जिस दुकानदार के स्थायी और विासी ग्राहक नहीं भला उसका काम कितने दिन चल सकता है? कुछ बताकर कुछ अन्य चीज देना एक गलत बात है, जिससे सारी प्रतिष्ठा धूलि में मिल जाती है। मनमाने दाम वसूल करना और नकली चीजें देना यह बहुत बड़ी धोखाधड़ी है।

चलते चलते

अपमानजनक दृश्य

शहरा बीत गया। श्रद्धा के साथ गंगा-यमुना में देवी की प्रतिमा का विसर्जन भी कर दिया गया। मगर अफसोस आजकल जिन तत्वों को मिलाकर प्रतिमा का निर्माण होता है, वही अब नदियों को प्रदूषित कर रहे हैं। बंगाल-बिहार का दशहरा हो या मुम्बई का गणपति उत्सव, कमोबेश देश में जहां भी सीमित समय के लिए मूर्ति की स्थापना होती है, वहां आसपास की नदी हो या समुद्र-विसर्जन के बाद बेहद यह अपमानजनक दृश्य होता है। जब से मूर्ति निर्माण में रसायनिक रंगों और प्लास्टिक का उपयोग बढ़ा है, यह नदियों के पारिस्थितिकी के लिहाज से बेहद खतरनाक हो गया है। देश की नदियां पहले से ही प्रदूषण की मार से नाले में तब्दील होती जा रही हैं। प्रदूषण को लेकर जन जागरूकता की भी कमी नहीं। इसके

जब से मूर्ति निर्माण में रसायनिक रंगों और प्लास्टिक का उपयोग बढ़ा है, यह नदियों के पारिस्थितिकी के लिहाज से बेहद खतरनाक हो गया है।

बावजूद लोग पूजा सामग्री नदियों में प्रवाहित करते हैं, जबकि दिल्ली जैसे शहरों में यमुना के किनारे विसर्जन के लिए पर्याप्त उपाय किए गए हैं। हमारी चेतना नहीं मालूम कहां सो सी गई है, हमारा समाज नदियों के प्रति श्रद्धा रखता है, उन्हें शुद्ध मानता है इसलिए प्रतिमाओं को उनमें विसर्जित करता है। मगर श्रद्धा में वह नदियों के ही दम घोंटे जा रहा है। सभी नदियों में पूजा सामग्री का विसर्जन कानूनन दंडनीय अपराध है, मगर कार्रवाई के उदाहरण नहीं होने से लोग-बाग इसे हल्के में लेते हैं। गंगा को तो हिन्दू संस्कृति में मां का दर्जा दिया गया है। हाल में इसी मां गंगे को बचाने के लिए स्वामी सानंद ने अपने प्राण त्याग दिए। सरकार 1986 से गंगा की सफाई में लगी हुई है। इसकी क्या प्रगति है, यह स्वामी सानंद की जान जाने से लगाई जा सकती है। पता नहीं क्यों हम यह समझने को राजी नहीं कि सिर्फ सरकार के बूते यह संभव नहीं ! जब तक समाज इसमें सक्रिय भागीदारी नहीं निभाता, सफाई का यह यज्ञ अधूरा ही रहेगा। हिन्दू धर्म का मर्म तो प्रकृति के सबसे करीब रहा है, बेहतर होगा कि इस मर्म को समझते हुए मूर्ति विसर्जन के लिए नदियों के अलावा अन्य विकल्पों का उपयोग किया जाए। पुणो में प्रतीकात्मक रूप से गणोश विसर्जन का प्रयोग अनुकरणीय उदाहरण हो सकता है। समय के साथ जो संस्कृति अपनी परम्परा में सामंजस्य लाती है, वही मजबूत होती है। पर्यावरण रहेगा तो लोग रहेंगे, लोग रहेंगे तो परम्परा रहेगी-इस सूत्र को आज जहां भी पर्यावरण और परम्परा में टकराहट हो रही है, वहां लागू करने की दरकार है।

फोटोग्राफी...

मैक्सिको की राजधानी में 12वें मोन्युमेंटल एलिब्रिज परेड-2018 के दौरान ''एलिब्रिज' की विशालकाय प्रतिमा को निहारते लोग।

दशकों के प्रयास

अक्टूबर में एक बार फिर चेतावनी दे दी है कि विश्व औसत तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक (औद्योगिक क्रांति से पहले के समय की तुलना में) सीमित करना अति आवश्यक है। इस कार्य के लिए अगले 12 वर्ष (यानी वर्ष 2030 तक का समय) सबसे महत्त्वपूर्ण है। दूसरी ओर, अभी तक की जितनी भी तैयारी है, उससे तो यही लग रहा है कि विश्व तापमान वृद्धि को इस हद तक नियंत्रित करने के लिए जितने ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना जरूरी है, उससे अभी हम बहुत दूर हैं। इसकी एक बड़ी वजह यह है कि विभिन्न अंतरराष्ट्रीय समझौतों और सम्मेलनों का जो ढांचा कई दशकों के प्रयास से तैयार किया गया है, वह अभी तक एक संकीर्ण दायरे में है। मौजूदा सोच में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कम करने के लिए शाश्वत ऊर्जा स्रेतों को अधिकतम बढ़ाने, वनीकरण बढ़ाने, वनों की रक्षा करने पर मुख्य जोर दिया जाता है। ये मुद्दे तो अपने में बहुत सही और जरूरी हैं पर इनके अतिरिक्त और भी बहुत कुछ किया जा सकता है; यह व्यापक दृष्टिकोण इस मुद्दे पर नहीं उभर रहा है। उदाहरण के लिए उपभोक्तावाद की पूरी सोच को चुनौती देने और हर तरह के अपव्यय, विषमता, विलासिता को रोकने से भी ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम होगा। शराब, तंबाकू, अनेक हानिकारक व खतरनाक रसायनों जैसे सभी हानिकारक उत्पादों में 50 से 80 प्रतिशत की कमी अगले 10 वर्षो में लाई जा सके तो इससे जो स्वास्य व सामाजिक लाभ होंगे, उनके साथ ग्रीनहाउस उत्सर्जन में भी कमी होगी। सबसे बड़ी जरूरत व संभावना तो हथियार उद्योग में कमी लाने की है। सेनाओं व हथियारों को इधर से उधर ले जाने में खर्च होने वाला जीवाश्म ईंधन बहुत हद तक बचाया जा सकता है। जलवायु बदलाव के दौर में अब नई बात यह जुड़ी है कि विभिन्न उत्पादन कायरे के लिए कितना कार्बन स्थान या स्पेस उपलब है, यह भी ध्यान में रखना जरूरी है। जब हम इन नई-पुरानी सीमाओं के बीच दुनिया के सब लोगों की जरूरतों को पूरा करने की योजना बनाते हैं तो स्पष्ट है कि वर्तमान अभाव की स्थिति को देखते हुए करोड़ों गरीब लोगों के लिए पौष्टिक भोजन, वस्त्र, आवास, दवाओं, कापी-किताब आदि का उत्पादन बढ़ाना होगा। इस उत्पादन को बढ़ाने में हम पूरा प्रयास कर सकते हैं कि ग्रीनहाउस गैस के उत्सर्जन को कम करने वाली तकनीकों का उपयोग हो पर यह एक सीमा तक ही संभव होगा। अत: यदि गरीब लोगों के लिए जरूरी उत्पादन बढ़ाना है तो उसके लिए जरूरी प्राकृतिक संसाधन व कार्बन स्पेस प्राप्त करने के लिए साथ ही यह जरूरी हो जाता है। वर्तमान विषमताओं वाले समाज में विश्व के धनी व्यक्तियों के पास क्रय शक्ति बेहद अन्यायपूर्ण हद तक केंद्रित है, अत: बाजार में उनकी गैर-जरूरी व विलासिता की वस्तुओं की मांग को प्राथमिकता मिलती रहेगी। गरीब लोगों की जरूरी वस्तुएं पीछे छूट जाएंगी, उनकी कमी बनी रहेगी या वह और बढ़ जाएगी। लिहाजा, यह बहुत जरूरी है कि ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने की योजना से विश्व के सभी लोगों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने की योजना को जोड़ दिया जाए व उपलब्ध कार्बन स्पेस में बुनियादी जरूरतों को प्राथमिकता देना एक अनिवार्यता बना दी जाए। हथियार समेत अनेक हानिकारक उत्पादों शराब, सिगरेट, कुछ बेहद खतरनाक केमिकल्स आदि के उत्पादन को कम करना करना जरूरी है। इसमें अनेक पेचीदगियां हैं, पर ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने की अनिवार्यता के दौर में इन उत्पादों को न्यूनतम करने का औचित्य पहले से कहीं अधिक मजबूत हो गया है।

सार समाचार

ताइवान में रेलगाड़ी के पटरी से उतरने से 18 लोगों की मौत, 160 घायल

यिलान, एजेंसी। ताइवान के लोकप्रिय तटीय रेलमार्ग पर रविवार को एक एक्सप्रेस ट्रेन के पटरी से उतरने और पलटने से कम से कम 17 लोगों की मौत हो गई। ताइवान रेल प्रशासन ने पुष्टि की कि यिलान काउंटी में ट्रेन हादसे में 18 लोगों की मौत हो गई और 160 लोग घायल हो गए। बहरहाल, प्रशासन ने इसकी पुष्टि नहीं की कि क्या कोई शख्स ट्रेन के अंदर अब भी फंसा हुआ है। घटनास्थल पर मौजूद एएफपी के एक पत्रकार ने बताया कि हादसे के चलते ट्रेन की कई बोगियां टूट और पिचक गई हैं। उनमें से और भी शव निकाले जा रहे हैं। टेलीविजन पर पेश फुटेज में पुयुमा एक्सप्रेस ट्रेन पटरियों पर आढ़ी-तिरछी पड़ी दिख रही है। रेल प्रशासन ने बताया कि शिनमा स्टेशन पर ट्रेन की आठों बोगियां पटरी से उतर गईं और पलट गईं। दैनिक 'एपल डेली को एक यात्री ने बताया कि सफर के दौरान ट्रेन अजीब तरीके से हिल रही थी। रेल प्रशासन ने बताया कि ट्रेन ताइतुंग जा रही थी और उसपर 366 लोग सवार थे। हादसा स्थानीय समयानुसार शाम चार बज कर 50 मिनट पर हुआ। ताइवान की राष्ट्रपति त्साइ इंग-वेन ने रविवार की शाम को एक ट्वीट संदेश में इसे एक बड़ा हादसा करार दिया। रक्षा मंत्रालय ने बचाव में मदद के लिए 120 सैनिक भेजे हैं।

4 करोड़ में नीलाम हुआ चांद का टुकड़ा, 'द मून पजल' के नाम से जानते हैं लोग

एजेंसी,बॉस्टन। चांद से लाया गया उल्कापिंड का एक दुर्लभ टुकड़ा 6.12 लाख डॉलर (लगभग 4.29 करोड़ रुपये) में नीलाम हुआ है। 'एनडब्ल्यूए-11789' नाम का यह उल्कापिंड छह टुकड़ों में बंटा है, जो आपस में किसी 'पजल (पहेली)' के रूप में जुड़े हुए हैं। यही कारण है कि खगोल जगत में इसे 'द मून पजल' के तौर पर भी जाना जाता है। अमेरिका स्थित नीलामी घर आरआर ऑक्शन के मुताबिक 'एनडब्ल्यूए-11789' सदियों पहले चंद्रमा की सतह से टकराया था। इसके बाद यह ढाई लाख किलोमीटर लंबा सफर तय करके धरती पर गिरा था। बीते साल उत्तर-पश्चिमी अफ्रीका के जंगलों में चल रहे एक खगोलीय मिशन के दौरान इसकी खोज हुई थी। आरआर ऑक्शन के प्रवक्ता की मानें तो 'एनडब्ल्यूए-11789' का वजन 5.5 किलोग्राम के करीब है। ?वियतनाम के तैम तुक पगोड़ा कॉम्प्लेक्स के प्रतिनिधियों ने इस पर 6.12 लाख डॉलर (लगभग 4.29 करोड़ रुपये) की सफल बोली लगाई।

अफगान चुनावों में हिंसा: लगभग 170 लोग हताहत

काबुल, एजेंसी। अफगानिस्तान में संसदीय चुनाव में हुई हिंसा में शनिवार को लगभग 170 लोग हताहत हुए है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि एक ताजा हमले में एक आत्मघाती हमलावर ने काबुल के एक मतदान केन्द्र में खुद को उड़ा लिया जिससे कम से कम 15 लोगों की मौत हो गई और 20 अन्य घायल हो गये। इस तरह अफगानिस्तान की राजधानी में मृतकों की संख्या 19 पहुंच गई जबकि लगभग 100 लोग घायल है। विस्फोट की तत्काल किसी भी संगठन ने जिम्मेदारी नहीं ली है, लेकिन तालिबान ने इससे पूर्व कहा था कि उसने ''फर्जी चुनाव पर 300 से अधिक हमलों को अंजाम दिया।

जम्मू में रविवार को पुलिस स्मृति दिवस के मौके पर शहीद पुलिसकर्मियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते उनके परिजन।

टेक्सास के ह्युस्टन स्थित एलिंगटन हवाई अड्डे पर शनिवार को विंग्स ऑवर ह्यूस्टन एयर शो के दौरान आग के शोलों के ऊपर अपने प्लेन से कलाबाजी करता एरोबैटिक पायलट सीन डोहार्टी टकर।

ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री ने बाल यौन उत्पीड़न के पीड़ितों से मांगी माफी

एजेंसी,कैनबरा। ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरिसन ने सोमवार को संसद में अपने भावुक संबोधन के दौरान बाल यौन उत्पीड़न के पीड़ितों से माफी मांगी। उन्होंने माना कि सरकार दशकों तक अंजाम दिए गए इन जघन्य अपराधों को रोकने में नाकाम रही। पूरे देश में टीवी पर प्रसारित इस संबोधन में मॉरिसन ने कहा, ''यह ऑस्ट्रेलियाइयों ने ऑस्ट्रेलिया के लोगों के साथ किया। दुश्मन हमारे बीच है। दुश्मन हमारे बीच है। उन्होंने कहा, ''एक राष्ट्र के तौर पर हमने उन्हें निराश किया। हमने उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया। हमारे लिए यह हमेशा शर्म की बात रहेगी। बेहद भावुक दिख रहे मॉरिसन ने कहा कि दुष्कर्म की यह घटनाएं धार्मिक और सरकार समर्थित संस्थाओं में होती रहीं। मॉरिसन ने ''स्कूलों, चर्चों, युवा समूहों, स्काउट समूहों, अनाथालयों, खेल क्लबों और घर-परिवारों में दिन ब दिन, हफ्ता दर हफ्ता, महीना दर महीना, साल दर साल हुई बाल यौन उत्पीड़न की इन घटनाओं के पीड़ितों से कहा - ''हम आपका यकीन करते हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, ''आज हम उन बच्चों से माफी मांगते हैं जिन्हें हमने निराश किया।

माफ कर दें। जिन माता-पिता के साथ विश्वासघात हुआ और जिन्होंने संघर्ष किया, माफ कर दें। उनसे भी माफी जिन्होंने इस बाबत आवाज तो उठाई, लेकिन उन्हें हमने सुना नहीं। मॉरिसन ने कहा कि वह उन जीवनसाथियों, साझेदारों, पत्नियों, पतियों, बच्चों से भी माफी मांगते हैं जिन्होंने दुष्कर्म, इन घटनाओं को दबाए जाने और इंसाफ की राह में रोड़े अटकाने के खिलाफ संघर्ष किया। उन्होंने पहले और आज की पीढ़ियों से भी माफी मांगी। पूरे देश में आयोजित आधिकारिक कार्यक्रमों में हजारों पीड़ितों ने इस संबोधन का प्रसारण देखा।

पुरुष करेंगे महिलाओं के हाथों अपने यौन शोषण का 'खुलासा'

नई दिल्ली। एजेंसी। मी टू (#Metoo) की तर्ज पर 15 लोगों के एक समूह ने मैन टू (#Mentoo) आंदोलन की शुरुआत करते हुए पुरुषों से कहा कि वो महिलाओं के हाथों अपने यौन शोषण के बारे में खुलकर बोलें। इन लोगों में फ्रांस के एक पूर्व राजनयिक भी शामिल हैं जिन्हें 2017 में यौन उत्पीड़न के एक मामले में अदालत ने बरी कर दिया था। मैन टू आंदोलन की शुरुआत शनिवार को गैर सरकारी संगठन चिल्ड्रन राइट्स इनिशिएटिव फॉर शेयर्ड पेरेंटिंग (क्रिस्प) ने की।

क्रिस्प के राष्ट्रीय अध्यक्ष कुमार वी ने कहा कि समूह लैंगिक तटस्थ कानूनों के लिए लड़ेगा। उन्होंने मांग की कि मी टू अभियान के तहत झूठे मामले दायर करने वालों को सजा मिलनी चाहिए। यह उल्लेख करते हुए कि मी टू एक अच्छा आंदोलन है, उन्होंने हालांकि कहा कि झूठे आरोप लगाकर किसी को फंसाने के लिए इसका दुरुपयोग नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, इस आंदोलन का परिणाम समाज में बड़ी मेहनत से अर्जित लोगों के सम्मान को धूमिल करने के रूप में निकला है। पत्रकारों से बात करते हुए बाद में उन्होंने कहा कि मी टू में जहां पीड़ितांए दशकों पहले हुए यौन उत्पीड़न की बात बता रही हैं, वहीं इसके विपरीत मैन टू आंदोलन में हालिया घटनाओं को उठाया जाएगा। मी टू आंदोलन के मुद्दे पर उन्होंने कहा कि अगर यौन उत्पीड़न का मामला सच्चा है तो पीड़िताओं को सोशल मीडिया पर आने की जगह कानूनी कार्रवाई का सहारा लेना चाहिए। इस अवसर पर फ्रांस के पूर्व राजनयिक पास्कल मजूरियर भी मौजूद थे जिन पर अपनी बेटी के यौन उत्पीड़न का आरोप लगा था, लेकिन 2017 में अदालत ने उन्हें बरी कर दिया था।

देशभर में मी-टू तो बरेली से शुरू हुआ आई-टू, जानें- क्यों शुरू हुआ ये अभियान

उन्होंने कहा कि मैन टू आंदोलन मी टू आंदोलन का जवाब देने के लिए नहीं है, बल्कि यह पुरुषों की समस्याओं का समाधान करेगा जो महिलाओं के अत्याचारों के खिलाफ नहीं बोलते हैं। पास्कल ने कहा, पुरुषों के पास असली दुख है...वे भी पीड़ित हैं, लेकिन वे महिलाओं और अपने दुराचारियों के खिलाफ खुलकर सामने नहीं आ रहे हैं। उन्होंने कहा, हम महिलाओं की सुरक्षा के लिए कानून बनाते हैं। यह अच्छा है, लेकिन हमें नहीं भूलना चाहिए कि मानवता का आधा हिस्सा पुरुष हैं। पास्कल अदालती लड़ाई का सामना कर रहे हैं क्योंकि उनकी पत्नी उन्हें बरी करने के निचली अदालत के फैसले के खिलाफ कर्नाटक उच्च न्यायालय चली गई थीं। फ्रांस के पूर्व राजनयिक की पत्नी के पास उनके तीन बच्चों का संरक्षण है।

फूड डिलीवरी ड्राइवर ने बचाई नहर में डूबती 6 साल की बच्ची की जान

चीन। चीन में एक फूड डिलिवरी ड्राइवर की बहादुरी से छह साल की बच्ची की जान बच गई। 23 साल के लिनफेंग ने नहर में कूदकर एक बच्ची को डूबने से बचा लिया। इस पूरी घटना का वीडियो एक कैमरे में कैद हो गया है। अपने इस कारनामे से लिनफेंग नाम का यह फूड डिलीवरी ड्राइवर सोशल मीडिया पर हीरो बन गया है।

मामला झेजियांग के शाओझिंग इलाके का है। शनिवार को शाओझिंग की एक नहर के किनारे पर खेलते-खेलते एक बच्ची का पांव फिसल गया और वह नहर में जा गिरी। दो-तीन सेकेंड में बच्ची नहर के पानी में डूबने लगी और छटपटाने लगी। तभी वहां से एक फूड डिलीवरी ड्राइवर गुजर रहा था। उसने डूबती बच्ची को देखकर फौरन अपना स्कूटर रोका और उसे बचाने के लिए नहर में कूद गया। युवक ने बच्ची को सुरक्षित नहर से बाहर निकाल लिया। नहर से बाहर आने के बाद युवक ने देखा कि बच्ची का एक जूता पानी में ही रह गया है। जूता लाने के लिए वह से नहर में कूदा और उसे ढूंढकर लेकर आया। इस वीडियो को CGTN ने अपने ट्विटर हैंडल पर शेयर किया है।

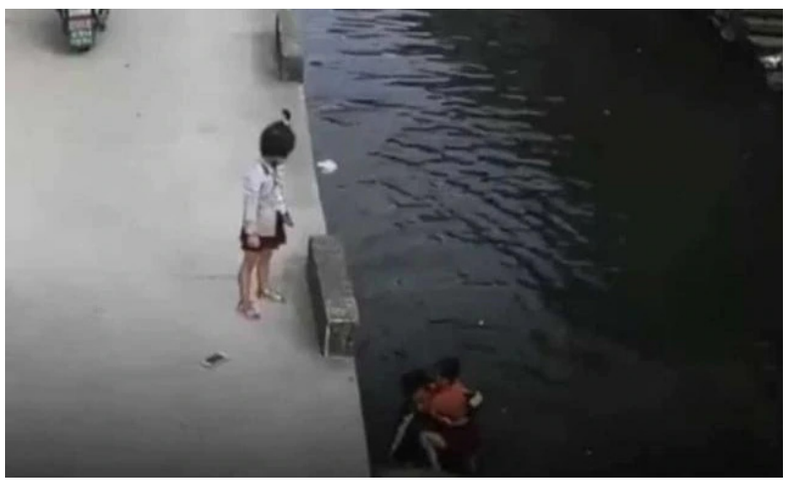

ट्विटर पर इसे करीब 50 हजार बार देखा जा चुका है। 250 से ज्यादा बार रीट्वीट किया जा चुका है। 1300 से ज्यादा इसे लाइक मिल चुके हैं। सोशल मीडिया पर इस वीडियो ने लोगों का दिल जीत लिया है। ड्राइवर ने यह भी सुनिश्चित किया कि बच्ची अपने घर सुरक्षित वापस पहुंच जाए।

उसके पेरेंट्स जॉब पर गए थे और बच्ची घर पर अकेली थी। यह युवक फूड रिव्यू एंड डिलीवरी सर्विस MeiTuan का कर्मचारी था। इस बहादुरी के लिए कंपनी ने उसे इनाम भी दिया।

अद्भुत : चीन और हांगकांग के बीच दुनिया का सबसे लंबा पुल

नई दिल्ली। विश्व के सबसे लंबे समुद्री पुल हांगकांग-जुहाई-मकाओ को 24 अक्तूबर को सड़क यातायात के लिए खोल दिया जाएगा। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। इस परियोजना की शुरुआत 2009 में हुई थी।

पानी के नीचे सुरंग

पुल पर्ल नदी के मुहाने पर स्थित अन्य शहरों को भी जोड़ेगा
पुल के निर्माण में करीब चार लाख टन इस्पात का इस्तेमाल हुआ
पूरी परियोजना पर करीब 10.7 अरब डॉलर का खर्च आया
पानी के नीचे बनी 6.7 किलोमीटर लंबी सुरंग के निर्माण किया गया

सफर का समय घटेगा

24 अक्तूबर को हांगकांग-जुहाई-मकाओ पुल खोला जाएगा
55 किलोमीटर कुल लंबाई है चीन-हांगकांग के बीच बने पुल की
35 किलोमीटर लंबे पुल का निर्माण समुद्र के ऊपर किया गया
100 किलोमीटर प्रति घंटा रफ्तार से वाहनों को चला सकेंगे
03 घंटे का समय लगता है अब हांगकांग से जुहाई की यात्रा में
30 मिनट का समय लगेगा पुल शुरू होने के बाद इस सफर में
09 साल का समय लगा पुल का निर्माण कार्य पूरा होने में
06 लेन वाले पुल का निर्माण तीन साल की देरी से हुआ

मरीज के पेट से निकाली 10 सेंटीमीटर की 122 कीलें, कांच के टुकड़े भी शामिल

एजेंसी। अदीस अबाबा में इथोपियाई डॉक्टरों ने एक मरीज के पेट में से सौ से अधिक कीलें और अन्य धारदार वस्तुएं निकाली हैं। पीटर स्पेशलाइज्ड हॉस्पिटल के दवाइत तेरे ने बताया कि 33 वर्षीय मरीज को कोई मानसिक रोग था और उसने 122 कीलें (10 सेंटीमीटर), चार पिनें, एक टूथपिक और टूटे ग्लास के शीशें खा लिए थे। यह ऑपरेशन करीब ढाई घंटे चला।

दवाइत ने 'एएफपी' से कहा, ''मरीज को पिछले 10 वर्ष से कोई मानसिक रोग था और पिछले दो वर्ष से उसने दवाई लेना बंद कर दिया था, जो ऐसी वस्तुएं खाने का एक संभावित कारण है।

उन्होंने आगे कहा कि, मुझे लगता है उसने ये चीजें पानी के साथ निगली होंगी। हालांकि, सौभाग्य से इन चीजों ने उसके पेट में जख्म नहीं बनाए। इन चीजों की वजह से उसके पेट में घातक संक्रमण हो सकता था, जो कि उसकी जान के लिए भी खतरनाक साबित होता। डॉक्टर ने कहा कि, हमने ऐसे कई केस देखें हैं, लेकिन उन सभी मामलों में ये मामला ज्यादा खतरनाक था।

उम्मीदवार एप बना कर रहे प्रचार, फेसबुक व ट्विटर को हो रहा नुकसान

वाशिंगटन, हिटी। क्या ऐसे समाज की कल्पना की जा सकती है, जिसमें ज्यादा से ज्यादा या बहुत कम लोग आपसे सहमत हों।

यह मुश्किल है, लेकिन अमेरिका में ऐसा करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

वहां इन दिनों मिडटर्म चुनाव की गतिविधियां तेज हैं, इसमें मतदाता दोनों सदनों के लिए अतिरिक्त उम्मीदवारों चुनते हैं।

दोनों दल मतदाताओं को लुभाने के लिए रोचक तरीके अपना रहे हैं। इसके लिए वे एप का इस्तेमाल कर रहे हैं।

रिपब्लिकन के कई उम्मीदवार राष्ट्रपति ट्रंप की तरह अपने एप बनवा चुके हैं। वे उसके जरिये ज्यादा से ज्यादा लोगों तक अपनी बातें पहुंचाने की कोशिश कर रहे हैं।

चुनाव गतिविधियों में लिप्त

इन दिनों हजारों अमेरिकी नागरिक चुनावी गतिविधियों में लिप्त हैं।

कोई प्रचार कर रहा है, तो कोई सभा संबोधित कर रहा है। डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन के अपने वाररूम हैं।

नेताओं ने अपने करीबियों को ज्यादा लोग जोड़ने की जिम्मेदारी सौंपी है। वे एप का प्रचार कर रहे हैं,

क्योंकि एप पर रोज के अपडेट, अलर्ट, कार्यक्रम आदि मिल रहे हैं। ये एप डाउनलोड करने के लिए मतदाताओं से उनके क्षेत्र का नाम, पिन कोड, उम्र आदि पूछी जा रही है।

डेमोक्रेटिक उम्मीदवारों ने कम एप बनवाए हैं। उनमें 'मिनिवैन' प्रमुख है। यह दल प्रत्येक यूजर को संदेश भेजकर अपनी बात पहुंचा रहा है।

कई रिपब्लिकन उनकी इस रणनीति से चिढ़ते हैं, क्योंकि ओबामा को ऐसे ही एप से उन्हें सफलता मिली थी।

सोशल नेटवर्किंग एप को नुकसान

- चुनावी उम्मीदवारों के एप से फेसबुक, ट्विटर और यूट्यूब को नुकसान हो रहा है। क्योंकि, चुनावी एप के कारण सोशल नेटवर्किंग के एप का इस्तेमाल कम हो गया है।
- नेताओं ने मतदाताओं को लुभाने के लिए अपने एप में वीडियो गेम, चैंटग, शेयरंग, इमोजी, पॉइन्ट हासिल करने और संदेश शेयर करने की सुविधा दी है।
- राष्ट्रपति ट्रम्प ने 2016 के चुनाव में अपने एप बनवाए थे, जिनमें 'ग्रेट अमेरिका' और 'अमेरिका फर्स्ट' प्रमुख हैं। इन एप के कुछ फीचर आज भी सक्रिय हैं।

गोडादरा में हुए तीन साल की बच्ची से रेप केस के आरोपी अनिल यादव को बिहार से लाया गया सूरत

सूरत। सूरत के गोडादरा विस्तार में तीन साल की मासूम से बलात्कार के बाद हत्या कर बिहार भाग जाने वाले आरोपि अनिल यादव को सूरत पुलिस ने बिहार पुलिस की मदद से पकड़ कर सूरत लाया गया। पुलिस ने पहले आरोपी को बक्सर कोर्ट में हाजिर किया जिसके बाद उसे सूरत लाने की इजाजत मिलने पर वाराणसी से भोलेनगरी एक्स.प्रेस. से सोमवार को सुबह उधना स्टेश पर चुस्त बंदोबस्त के साथ सूरत लाया गया। जिसके बाद कमिश्नर ने एक प्रेस कांनफ्रेंस कर मीडिया और समाज को बताया की आरोपी कोई जाती या धर्म नहीं होता अत: बलात्कार और हत्या के आरोपी को किसी जाती या धर्म का नहीं बल्की आरोपी ही समझा जाए।

63 एकता रथ ने दो दिनों में पांच महानगर और 1130 गांवों में भ्रमण किया

सूरत। राष्ट्र की एकता और अखंडता के शिल्पकार लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के एकता संदेश को जन-जन में फैलाने के लिए राज्य में आयोजित एकता यात्रा को गांव-गांव में प्रचंड जन समर्थन मिलने का सरकार ने दावा किया है। राज्य में दो चरणों में 10 हजार गांवों में आयोजित होने वाली इस एकता यात्रा के पहले चरण का शनिवार से राज्यव्यापी शुभारंभ हुआ है।

यात्रा के दो दिनों के दौरान 33 जिलों एवं सूरत, अहमदाबाद, राजकोट, वडोदरा एवं जूनागढ़ सहित पांच महानगरों में 63 एकता रथ ने 1130 गांवों और महानगरों के 16 वार्ड में भ्रमण किया है। सरदार साहेब की प्रतिमा की प्रतिकृति के साथ आयोजित इस रथ यात्रा में 3 लाख 57 हजार नागरिक उत्साह के साथ शामिल हुए और एकता की सामूहिक शपथ ली। एकता यात्रा के दौरान एकता रथ द्वारा प्रसारित होने वाले सरदार साहेब के जीवन दर्शन एवं राष्ट्र के प्रति उनके योगदान का प्रेरणा संदेश भी सभी ने सुना।

सरदार साहेब की विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा स्टेच्यू ऑफ यूनिटी के 31 अक्टूबर को लोकार्पण से पूर्व जन-जन में एकता का राष्ट्र भाव उजागर करने के लिए यह यात्रा आयोजित हो रही है। मुख्यमंत्री विजय रूपाणी, उप मुख्यमंत्री नितिनभाई पटेल सहित वरिष्ठ मंत्रियों द्वारा 19 अक्टूबर को इस यात्रा का पांच क्षेत्रों से प्रारंभ कराने के बाद 20 अक्टूबर से इस एकता यात्रा का नेतृत्व विभिन्न जिलों में मंत्री और पदाधिकारी कर रहे हैं।

सूरत समेत समस्त गुजरात में स्वाइन फ्लू का कहर जारी

अब तक 52 लोगों की मौत

सूरत। सूरत समेत राज्यभर में स्वाइन फ्लू का कहर जारी है और अब तक यह रोग 52 लोगों को निगल गया है। वहीं राज्यभर में स्वाइन फ्लू के कुल मामले 1629 पर पहुंच गए हैं। केवल अहमदाबाद में 656 स्वाइन फ्लू के केस सामने आए हैं।

सूरत, अहमदाबाद, वडोदरा, आणंद, कच्छ और भावनगर समेत राज्य के कई जिलों में स्वाइन फ्लू ने कहर बरपा रखा है। जनवरी से अब तक राज्यभर में स्वाइन फ्लू से कुल 52 लोगों की मौत हो चुकी है। जबकि स्वाइन फ्लू के मामले 1629 पर पहुंच गए हैं। जिसमें स्वाइन फ्लू ग्रस्त 218 मरीजों का राज्य के विभिन्न अस्पतालों में उपचार चल रहा है, जबकि 1360 मरीजों को उपचार के बाद अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया। अहमदाबाद समेत राज्यभर में स्वाइन फ्लू की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य विभाग की ओर से हरसंभव प्रयास जारी है, इसके बावजूद इसके मामले में बढ़ते जा रही है। अहमादाबाद में स्वाइ फ्लू के 5 अन्य मामलों के साथ इसकी सं या 656 पर पहुंच गई है। इसके अलावा आणंद में 3, सूरत, वडोदरा, कच्छ और भावनगर में स्वाइन फ्लू के 2-2 केस दर्ज हुए हैं। अहमदाबाद में स्वाइन फ्लू से अब तक कुल 18 लोगों की मौत हो चुकी है।

राज्य में ठंड की दस्तक, देर रात और सुबह गुलाबी ठंड का अहसास

सूरत। मानसून के खत्म होने के बाद से ठंड की प्रतीक्षा की जा रही है और लंबे इंतजार के बाद आखिरकार ठंड की दस्तक हो गई है। शहर समेत गुजरातभर में सुबह और देर रात ठंड का अहसास होने लगा है। नवरात्रि के प्रारंभ होते ही ठंड की दस्तक हो जाती थी, परंतु अब ग्लॉबल वॉर्मिंग के चलते ऋतुचक्र में किसी हद तक फेरबदल दर्ज हुआ है। सोमवार की सुबह अचानक मौसम बदलने का अहसास हुआ। सुबह के दौरान लोगों ने गुलाबी ठंड महसूस की। अपर्याप्त बारिश होने की वजह से ठंड का मौसम चर्चा का विषय बना हुआ था। सूरत में आज सुबह का तापमान 22.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। आगामी दिनों में तापमान घटकर 18 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। वहीं गुजरात की राजधानी गांधीनगर में आज सुबह का तापमान 16.5 डिग्री, वडोदरा में 20 डिग्री, राजकोट में 20.8 डिग्री और कच्छ में 17.8 डिग्री तापमान दर्ज हुआ।

सूरत। सोमवार को सूरत शहर जिला कांग्रेस समिति का मुख्य कार्यालय का उद्घाटन किया गया जिसमें गुजरात प्रदेश कांग्रेस समिति के प्रमुख अमितभाई चावड़ा और गुजरात प्रदेश कांग्रेस समिति के सह प्रभारी विश्वासरंजन मोहंती की अध्यक्षता में यह कार्यक्रम हुआ।

आदिवासियों और प्रकृति प्रेमी में नाराजगी

स्टेच्यू यूनिटी के उद्घाटन में वर्षों पुराने पेड़ों को काटा

उद्घाटन के मार्ग को व्यवस्थित बनाने के लिए डेढ़ सौ वर्ष या उससे ज्यादा पुराने बहुमूल्य पेड़ों को काटा गया

अहमदाबाद । आगामी ३१ अक्टूबर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी स्टेच्यू ऑफ यूनिटी का लोकार्पण करेंगे और इसके लिए तैयारियां चल रही है तब इसके दूसरी ओर, स्टेच्यू ऑफ यूनिटी के लोकार्पण की तैयारी या इसके उत्साह में स्थानीय प्रशासन द्वारा बड़े प्रमाण में वर्षों पुराने पेड़ों को काटा गया है। उद्घाटन स्थल तक के मार्ग को व्यवस्थित बनाने के लिए डेढ़ सौ वर्ष या उससे भी ज्यादा पुराने बहुमूल्य पेड़ों को काटे जाने से आदिवासियों और प्रकृति प्रेमी में नाराजगी फैल चुकी है । स्टेच्यू ऑफ यूनिटी के लोकार्पण का मामला हाल राज्य में प्रमुख स्थान पर रहा है तब दूसरी तरफ, स्थानीय आदिवासियों से लेकर राज्य के आदिवासी समाज में यह प्रॉज क्ट की आड़ में सरकार द्वारा उनकी जमीन हड़पने से लेकर

बेघर करने तक हो रहे प्रयासों को लेकर कहीं न कहीं विरोध हो रहे होने का भी सामने आ रहा है। स्टेच्यू ऑफ यूनिटी के लोकार्पण के लिए गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रुपाणी और गुजरात सरकार द्वारा तैयारियां चल रही है स्टेच्यू ऑफ यूनिटी तक पहुंचने के लिए मार्गों को व्यवस्थित बनाने के लिए बड़े प्रमाण में पेड़ों को काटा गया है । जि समें कई पेड़ १०० से १५० वर्ष पुराने है। इस मामले में स्थानीय आदिवासियों और प्रकृति प्रेमी लोगों ने प्रशासन के इस फैसले का विरोध करके नाराजगी व्यक्त की है । स्थानीय आदिवासियों के बताये अनुसार स्टेच्यू ऑफ यूनिटी तक पहुंचने पर मार्गों में अंकलेश्वर से केवडिया कोलोनी और बडौदा के कपुराई चौकडी से केवडिया तक मार्ग पर आते सैकड़ों पेड़ों को काटा गया है । सरकार और प्रशासन अपना अच्छा बताने के लिए निदोष और बहुमूल्य पेड़ों को काट रहे है यह एक गंभीर अपराध है । इस मामले में राजपीपला में रहते प्रफुलभाई वसावा पिछले कई वर्षों से आदिवासी अग्रणी के तौर पर जंगलों और आदिवासी लोगों की मदद के लिए काम करते है ।

सूरत। चांदनी पड़वा के पास आते ही मीठाई बनाने वाले कारिगरो ने घारी बनाना शुरु कर दिया, एक मीठाई की दुकान में घारी बनाता कारिगर।

विशाला ब्रिज की हालत गंभीर, प्रशासन उदासीन

अहमदाबाद । अहमदाबाद म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन द्वारा फिलहाल में दशकों पुराने रेलवे ओवरब्रिज की रिपेरिंग का काम शुरू किया गया है, जिसके तहत चामुंडा रेलवे ओवर ब्रिज, सारंगपुर रेलवे ओवर ब्रिज का काम पूरा कर लिया गया है हाल में गिरधरनगर रेलवे ओवर ब्रिज का काम चालू है। लेकिन दूसरी तरफ, सरखेज हाईवे पर विशाला सर्कल से नारोल हाईवे को जोड़नेवाला साबरमती नदी पर ब्रिज की खराब हालत को लेकर बड़ा विवाद पैदा हो गया है। विशाला ब्रिज की हालत गंभीर, जर्जर और खतरनाक बन रही है फिर भी एएमसी प्रशासन सहित के प्रशासन इस मामले में उदासीन बन रहे है। जिसके कारण कभी भी विशेष करके रात के समय में कोई गंभीर दुर्घटना हो तो बड़ी दुर्घटना या जानहानि होने की दहशत पैदा हो गई है। यह रिवरब्रिज पर सुबह-शाम के समय तो ट्राफिकजाम होता है।

भाडज का हरेकृष्ण मंदिर विवाद में फंसने से चर्चा

अहमदाबाद। कुछ दिन पहले ही चर्चा का केन्द्र रहा भाडज का हरेकृष्ण मंदिर फिर से विवाद में आया है। धर्म और आध्यात्मिकता के नाम पर युवाओं के माइन्ड वॉश कर रहे होने का और एक परिवार ने आरोप लगाया है। मूल झारखंड के गया जिला के प्रशांत परिवार ने आरोप लगाया है कि, उनके बेटे का ब्रेनवॉश करके हरे कृष्ण मंदिर के लोगों ने उसे परिवार से दूर कर दिया है। प्रशांत की बहन प्रीति ने खुलासा किया है कि, हरेकृष्ण मंदिर के संतों ने इसका भी ब्रेनवॉश करने का प्रयास किया, लेकिन वह उनकी चंगुल में नहीं फंसी लेकिन उसका भाई फंस गया। सोमवार को इस परिवार ने अपने एक के बेटे को वापस लेने के लिए विनंती कर रहे है। जबकि एक बहन ने अपने भाई को वापस लाने के लिए सोशल मीडिया की मदद मांगी है। अपने बेटे पर गर्व करनेवाली मां अब रो रही है। भगवान ने दिया बेटा भगवान के नाम पर कोई ब्रेनवॉश कर लेने से परिवार में नाराजगी फैल गई है। प्रशांत के पिता एलके. सिंह एयरफोर्स में वींग ऑफिसर है। वर्ष-२०१४ में उनका तबादला होने पर वह परिवार के साथ अहमदाबाद आये थे। प्रीति और प्रशांत अहमदाबाद की कॉलेज में एडमिशन लिया था। अब भाडज के हरेकृष्ण मंदिर के लोग कॉलेज में आकर युवाओं को धर्म के नाम पर समझाते थे।

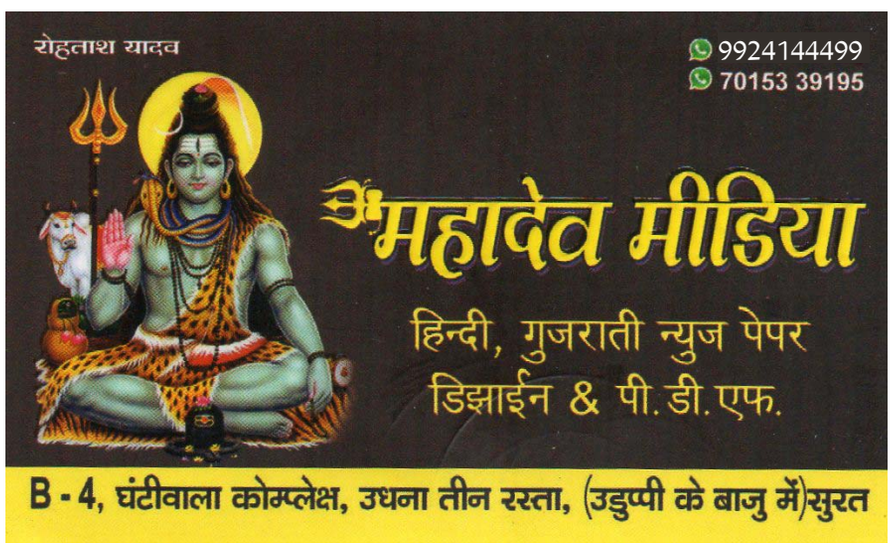

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ऑफसेट एफपी. 149, प्लोट 26 खोडियार नगर, सिद्धीविनायक मंदिर के पास, (भाटेना) हॉ.सो. अंजना सूरत, गुजरात से मुद्रित, एवं 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात से प्रकाशित, **संपादक :- सुरेश मौर्या** फोन नं. (9879141480) **RNI.No. : GUJHIN/2018/75100**, E-mail: krantisamay@gmail.com